## ① कुतुबुद्दीन ऐबक का सैन्य अभियान :—

की सत्ता पर अपना अधिपत्य कायम किया। दिल्ली के पास इन्द्रप्रस्थ को अपना केन्द्र बनाकर उसने भारत की विजय नीति अपनायी।

अथवा भारत पर इससे पहले किसी भी मुस्लिम शासक का प्रभुत्व तथा शासन इतने समय तक नहीं टिका था।

जाट सरदारों ने हाँसी के किले को घेरकर तुर्क किलेदार मलिक नसीरुद्दीन के लिए संकट खड़ा कर दिया था पर ऐबक ने जाटों को पराजित कर हाँसी के दुर्ग पर पुनः अधिकार कर लिया। सन् 1194 में अजमेर के उसने दूसरे विद्रोह को दबाया और कन्नौज के शासक जयचन्द्र के सातथ चन्दवार के युद्ध में अपने स्वामि का साथ दिया।

सन् 1195 ई० में उसने कोइल (अलीगढ़) को जीत लिया। सन् 1197 ई० में अजमेर के मेदों ने तृतीय विद्रोह का आयोजन किया, जिसमें गुजरात के शासक भीमदेव का हाथ था। मेदों ने कुतुबुद्दिन के प्राण संशय/संशय में डाल दिये पर उसी समय महमूद ग़ोरी के आक्रमण/आगमन की सूचना आने से मेदों ने घेरा/बीड़ा उठा लिया और ऐबक बच गया। इसके बाद सन् 1197 ई० में उसने भीमदेव की राजधानी अन्हिलवाड़ा को लूटा और प्रचूर धन लेकर वापस लौटा।

- इसके साथ ही साथ कुतुबुद्दिन ऐबक का संक्षिप्त विवरण :
  1. पूरा नाम : कुतुबुद्दिन ऐबक
  2. जन्म-भूमि : तुर्किस्तान
  3. मृत्यु तिथी : : 1210 ई०
  4. शासन काल : 1206 - 1210 ई०
  5. राज्याभिषेक : जून 1206 ई०, लाहौर
  6. धार्मिक मान्यता : इस्लाम
  7. युद्ध : तराइन का युद्ध मुहम्द ग़ोरी की ओर से, चन्दवाड़ा युद्ध
  8. निर्माण : कुव्वत-उल-इस्लाम : दिल्ली, ढाई दिन का झोपड़ा अजमेर, कुतुबमीनार।
  9. मक़बरा/मकबरा : - लाहौर में।

- कुतुबुद्दिन ऐबक की समस्याऐं एवं उपलब्धियाँ :
  जिस समय कुतुबुद्दिन ऐबक स्वतंत्र शासक बना उसके सामने अनेक समस्याएं थीं, जिनका समुचित समाधान किया जाना अत्यंक आवश्यक था। ऐबक की समस्याऐं कुछ इस तरह थी।

  1. अमीरों की समस्या : ऐबक जब अपनी राजगद्दी पर पीठासीन हुआ तो उसके सामने, अमीर उसे अपना सुल्तान स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। यल्दौज, कुबाचा तथा खिलजी सरकार उसकी अधिनता स्वीकार करना अपना उपहास समझते थें। इन कठिन परिस्थिती के निराकरण के लिए ऐबक को काफी संघर्ष करना पड़ा।